

भारत की भुगतान संतुलन स्थितिका आकलन

चर्चा में क्यों?

- भारतीय रज़िर्व बैंक के आँकड़ों के अनुसार 2017-18 के लिये भारत का भुगतान संतुलन यह प्रदर्शति करता है कि चालू खाता घाटा (CAD) 48.72 बलियिन डॉलर है जो कि 2012-13 के रिकॉर्ड 88.16 बलियिन डॉलर के बाद से सर्वाधिक है।
- हाल ही में स्विस नविश बैंक क्रेडिट सुईस ने 2018-19 में भारत के लिये 55 बलियिन डॉलर के शुद्ध पूंजी प्रवाह की भविष्यवाणी की है जो कि 75 बलियिन डॉलर के अनुमानति चालू खाता घाटे से कम है। इस कारण से 2011-12 से लेकर अब तक पहली बार वदिशी मुद्रा भंडार में कमी आने की संभावना है।
- रज़िर्व बैंक के आँकड़े पहले ही यह प्रदर्शति करते हैं कि 8 जून, 2018 को वदिशी मुद्रा भंडार 413.11 बलियिन डॉलर रहा, इसमें मार्च 2018 की समाप्त के स्तर से 11.43 बलियिन डॉलर की कमी आई है।

महत्त्वपूर्ण बदि

- भारत का वदिशी मुद्रा भंडार मार्च 2018 तक 424.55 बलियिन डॉलर का था जो कि वशिष में आठवाँ सबसे बड़ा वदिशी मुद्रा भंडार है, इससे 10.9 माह की आयात ज़रूरतों को पूरा किया जा सकता है।
- इस दृष्टिकोण से आर्थिक तंगी का कोई भी संकेत पूरी तरह गलत होगा क्योंकि रज़िर्व बैंक का वर्तमान मुद्रा भंडार तत्काल आयात ज़रूरतों और रुपए पर आने वाले संकट दोनों को टालने के लिये पूरणतः पर्याप्त है।
- सामान्यतः सभी राष्ट्र आयातों की तुलना में निर्यातों से अपने मुद्रा भंडार को संचति करते हैं। निर्यात के मुकाबले वाणजियकि वस्तुओं के आयात की कीमतों के साथ भारत को हमेशा अपने पण्य व्यापार खाते पर घाटे का सामना करना पड़ा है। परंतु उसी दौरान देश को परंपरागत रूप से अपने अदृश्य खाते पर अधिशेष का लाभ मिला है।
- अदृश्य खाते में मूलतः सॉफ्टवेयर सेवाओं के निर्यात से प्राप्तियाँ, परवासी श्रमिकों द्वारा आवक प्रेषण और पर्यटन तथा दूसरी तरफ बैंकिंग, बीमा और शपिगि सेवाओं के अलावा ब्याज भुगतान, वदिशी ऋण पर लाभांश एवं रॉयल्टी, नविश और प्रौद्योगिकी/ब्राण्डों को शामिल किया जाता है।
- लेकिन अदृश्य अधिशेष 2001-02 से 2003-04 के तीन वर्षों के अलावा व्यापार घाटे से अधिक नहीं है इसके परिणामस्वरूप देश लगातार चालू खाता घाटा दर्ज कर रहा है।
- चालू खाता घाटा 2012-13 के 88.16 बलियिन डॉलर से घटकर 2016-17 में 15.30 बलियिन डॉलर हो गया, इसका मुख्य कारण भारत के तेल आयात बलि में लगभग आधे की कमी होना है जो कि 164.04 बलियिन डॉलर से घटकर 86.87 बलियिन डॉलर हो गया।
- हालाँकि, 2017-18 में चालू खाता घाटा 48.72 बलियिन डॉलर हो गया और कच्चे तेल की वैश्वकि कीमतों में पुनः बढ़ोत्तरी के कारण इस वत्ति वर्ष में इसके 75 बलियिन डॉलर से ज़्यादा होने की उम्मीद है।
- भारत के संदर्भ में अब पूंजी प्रवाह के कम होते जाने के संकेत मलि रहे हैं। वदिशी पोर्टफोलियो निविशकों ने 1 अप्रैल से भारतीय इक्विटी और ऋण बाजारों में 7.9 बलियिन डॉलर की शुद्ध बकिरी की है। यह अमेरिका में बढ़ती ब्याज दरों और यूरोपीय सेंटरल बैंक की 2018 के अंत तक अपने मौद्रकि प्रोत्साहन कार्यक्रम को समाप्त करने की योजना के फलस्वरूप उभरती बाजार अर्थव्यवस्थाओं में एक बड़े बकिने वाले पैटर्न का हसिसा है।

भारत द्वारा चालू खाता घाटे का प्रबंधन

- एक देश का वदिशी मुद्रा भंडार न केवल वस्तुओं और सेवाओं के निर्यात से संचति होता है बल्कि वदिशी निविश, वाणजियकि उधारियाँ या वदिशी सहायता के रास्ते पूंजी प्रवाह से भी प्राप्त होता है।
- इसी वज़ह से कई वर्षों से चालू खाता घाटा होने के बावजूद भारत के पास पर्याप्त वदिशी मुद्रा भंडार बना हुआ है क्योंकि अधिकांश वर्षों में भारत में शुद्ध पूंजी प्रवाह, चालू खाता घाटे से ज़्यादा रहा है। यही पूंजी प्रवाह का अधिशेष वदिशी मुद्रा भंडार के निर्माण में सहायक होता है।
- इसका सबसे बेहतरीन उदाहरण वर्ष 2007-08 में देखने को मलि, जब शुद्ध वदिशी पूंजी अंतरवाह 107.90 बलियिन डॉलर था, जो 15.74 बलियिन डॉलर के चालू खाता घाटे से काफी अधिक हो गया, जिससे एक वर्ष के दौरान ही वदिशी मुद्रा भंडार में 92.16 बलियिन डॉलर की अभिवृद्धि हो गई।
- हालाँकि, 2008-09 और 2011-12 जैसे कुछ वर्ष भी रहे हैं, जहाँ अपर्याप्त शुद्ध पूंजी प्रवाह के कारण वदिशी मुद्रा भंडार में कमी देखी गई जिससे चालू खाता घाटे का वत्तिपोषण भी संभव नहीं था।

भुगतान संतुलन के संबंध में भारत की वशिष स्थिति

- भारत और ब्राजील अर्थव्यवस्थाओं के अद्वितीय मामलों का प्रतिनिधित्व करते हैं जिन्होंने भुगतान संतुलन के चालू खाते की बजाय अपनी पूंजी की ताकत पर बड़े स्तर के वदिशी मुद्रा भंडार बनाए हैं। भारत इस मामले में और भी वशिष है क्योंकि ब्राज़िलियन मुद्रा रयिल के विपरीत इसकी मुद्रा

अपेक्षाकृत स्थिर है और लगातार कारोबारी उतार-चढ़ाव से होने वाले जोखिम से सुरक्षित है।

- सदिधांततः, एक देश तब तक चालू खाता घाटे को वृत्तपोषति करने के लिये पूंजीगत प्रवाह को आकर्षति कर सकता है जब तक इसकी वकिस संभावनाएँ अच्छी हों और नविश वातावरण भी समान रूप से बेहतर हो।
- हालाँकि, यदि ऐसा वदिशी नविश सामान्य उत्पादन या घरेलू बाजार के लिये आयात करने के वपिरीत अर्थव्यवस्था के वनिरिमाण और सेवाओं की नरियात कषमताओं को बढ़ाने की दशिा में कथिा जाता है, तो भी सहायक होगा। लंबे समय तक यह चालू खाता घाटे को अधिक टकिाऊ स्तर तक सीमति करने में मदद कर सकता है।

PDF Referenece URL: <https://www.drishtias.com/hindi/printpdf/assessing-the-bop-position-of-india>

